आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 4/दिसंबर 2024
Received: 10/12/2024; Published: 30/12/2024

कविता

नीरा फिर पगला गई है!

- तुलसी छेत्री
मोबाइल संख्या: 9620566674
अथिति संकाय, कॉटन यूनिवर्सिटी
असम

पालतू कबूतरों के
पंखों को नोच
बाएं बगल खोंस,
देहरी पर बैठ जाया करती है नीरा!
पतंग का मांझा
दाहिने पैर पर बांध
छत पर खड़ी रहती है नीरा!
पन्नी में हवा भर
कमर पर कस
बादलों की ओर देखती है नीरा!
मानिए मेरी बात
नीरा, फिर पगला गई है।

नीरा - उड़ने को आतुर स्त्री।

****